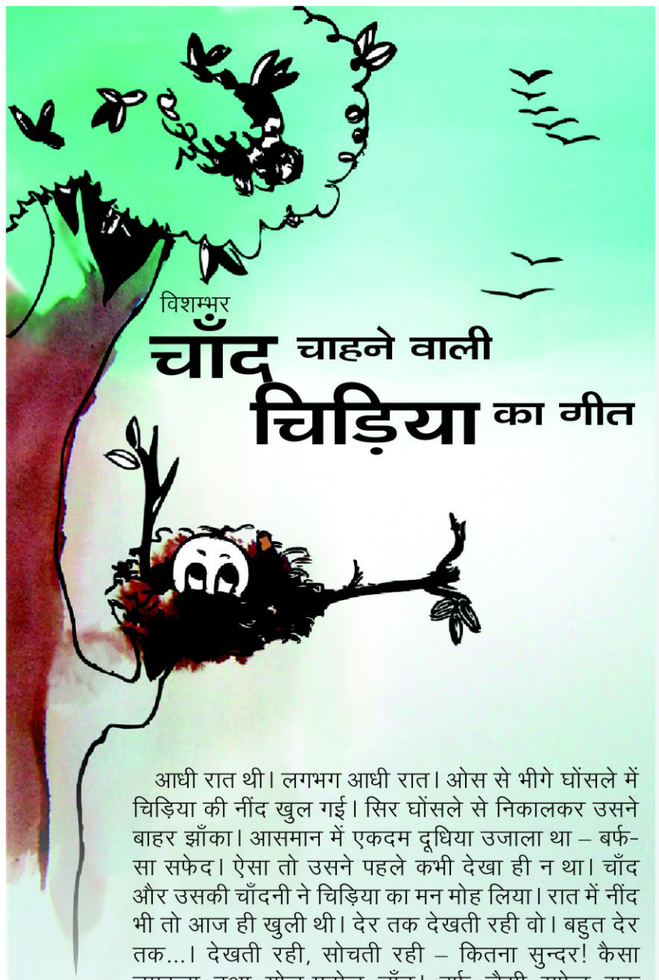

विशम्भर

चाँद चाहने वाली चिड़िया का गीत

आधी रात थी। लगभग आधी रात। ओस से भीगे घोंसले में चिड़िया की नींद खुल गई। सिर घोंसले से निकालकर उसने बाहर झाँका। आसमान में एकदम दूधिया उजाला था – बर्फ-सा सफेद। ऐसा तो उसने पहले कभी देखा ही न था। चाँद और उसकी चाँदनी ने चिड़िया का मन मोह लिया। रात में नींद भी तो आज ही खुली थी। देर तक देखती रही वो। बहुत देर तक...। देखती रही, सोचती रही – कितना सुन्दर! कैसा चमकता हुआ गोल-मटोल चाँद। बर्फ जैसी सफेद झक चाँदनी।

"मैं वहाँ जाना चाहती हूँ। पर वो तो दूर है आसमान में।"

"ऐसा भी कितनी दूर होगा? आसमान से तो वो काफी नीचे ही है। दिख तो रहा ही है और क्या? मैं दाना चुगने भी तो कितनी दूर जाती हूँ। उससे भी क्या दूर होगा?"

"मुझे जाना है! जाना है!" उसका मन लगातार यही कहता रहा। "इतनी दूर जाऊँगी तो दाना कहाँ चुगूँगी? पानी कहाँ पिऊँगी? थक जाऊँगी तो सुस्ताऊँगी कहाँ? अब तो चाँद की राह में ही सुस्ताऊँगी।" वह सोचती रही।

"दानों की एक पोटली अपने साथ ले लूँगी। चोंच तो दुखेगी पर ऐसा करूँगी पोटली को गर्दन में लटका लूँगी। कहीं उसके वज़न से मेरी गर्दन ही न लटूम जाए? गर्दन लटूम गई तो चाँद के रास्ते में अच्छा-खासा मज़ाक बन जाएगा मेरा। सुन्दर चाँद को यह बात पता चली तो? ओह! क्या सोचेगा चाँद मेरे बारे में। चाँद की इच्छुक चिड़िया में इतनी भी अक्ल नहीं। नहीं-नहीं पोटली नहीं ले जाऊँगी।"

"तो फिर? तो फिर क्या? अरे चाँद के रास्ते में क्या खेत नहीं होंगे? खेत जो ज़रूर ही होंगे। पर खेत कहना भी चाहिए क्या उन्हें? वे तो फसलों के हरे समुन्दर होंगे। फसलों के हरे समुन्दर ही कहना चाहिए चाँद के रास्ते में पड़ने वाले खेतों को। ओह! आसमान के खेत देखने का भी तो पहला ही मौका होगा यह मेरे लिए। मैं इन छोटी-छोटी बातों को तो भूले ही जा रही हूँ।" वह सोचती जा रही थी।

"चुग्गे का इन्तज़ाम तो हुआ। पर पानी? पानी की बदलों में क्या कमी? पानी तो मैं बादलों से ही पी लूँगी। रात तो आधे रास्ते में ही बीत जाएगी। पर मैं उड़ती रहूँगी। वहाँ पहुँचकर ही आराम करूँगी। वहाँ आराम कर रही होऊँगी तब चाँद भी तो वहीं होगा। बिल्कुल सटकर ही बैठा हुआ। बल्कि वह तो यह भी देख रहा होगा कि मैं कैसे आराम करती हूँ।"

"मैं सोचती ही रहूँगी या उड़ूँगी भी अब?" और वह उड़ चली। अपने ओस से भीग रहे खरपतवार के घोंसले को अलविदा कहना भी उसे याद न रहा। सफेद चाँदनी में सरसों के पीले खेतों के ऊपर से कोहरे में उड़ती चिड़िया किसी धब्बे की तरह तिरती दिख रही थी। उड़ती गई वह। उड़ती गई। उड़ती गई। उड़ती ही गई। बादलों में पहुँची तो वहाँ पानी नहीं था। बादल भी बादल-सा बादल नहीं था। घोंसले से जैसा दिखता था वह तो था ही नहीं। कुछ और ही था।

"आह! सुन्दर चाँद तो अब भी उतना ही दूर था जितना घोंसले से दिखाई दे रहा था।"

उसका मन उदास होने लगा। उड़ते-उड़ते उसे बहुत समय हो गया था। थकान होने लगी थी उसे। पर यह क्या! यह रात किन सुर्ख रोशनियों में घुलने लगी? अलभोर का नारंगी सुहानापन सारे आकाश में फैल गया। "अरे, यह तो सूरज निकल आया! चाँद कहाँ गया?" चिड़िया चहकी। गो कि उसके चहकने का वक्त हो गया।

उसने वापस अपने घोंसले में लौटने का मन बनाया। लौट तो रही थी वह, पर दुखी बहुत थी। इसलिए नहीं कि थक गई थी। बल्कि इसलिए कि जिस अनूठे सौन्दर्य को उसने घोंसले से देखा था वह उस तक पहुँच नहीं पाई थी। वह अपने घोंसले में जाकर सो गई।

हर सुबह की तरह उस सुबह भी संसार के सारे पक्षी उड़ते हुए सारी धरती पर फैल गए थे। लेकिन एक चिड़िया चुग्गे की तलाश में नहीं आई। कोई भी नहीं जानता कि एक घोंसले में एक चिड़िया दिन के वक्त क्यों सो रही है?

दिन जाते हैं, रातें आती हैं। वह चिड़िया रात को जाग-जागकर अब भी चाँद को देखती है। मन तो उसका अब भी करता है चाँद पर जाने का, पर जाए कैसे? इतनी दूर। दूर से भी दूर।

रात के आसमान में अब भी अकेली चिड़िया उड़ती दिख जाती है। उसे देख रात की हवाएँ चाँद की इच्छुक चिड़िया के लिए गाती हैं:

दूर तो
दूर से भी दूर है
मगर चाँद तो उससे भी दूर है
चाँद से दूर तो कुछ भी नहीं है!

चित्रः नेहा बहुगुणा

हाय! बिजली

एक रात मैं पहुँचा पेट्रोल पम्प,
वहाँ मचा हुआ था बड़ा हड़कम्प।
मैंने पूछा क्या हुआ भाई,
बिजली हो गई हवा हवाई।
लोग तेल के लिए मरे जा रहे थे,
एक दूसरे का गला दबा रहे थे।
लगी एक लम्बी कतार थी,
तेल की तो साहब, बड़ी मार थी।
मैंने उससे दो लीटर तेल माँगा,
उसने थमा दिया मुझे दो मीटर धागा।
कहने लगा यह वहाँ लगा दो,
आने वालों को वापस भगा दो।
मैंने सोचा थोड़ी रिश्वत लेगा,
पर मुझे तेल तो लाकर देगा।
अगर रिश्वत लेकर ना माना,
और कह दिया भैया बाद में आना।
मेरी तो फिर वाट लग जाएगी,
घर पहुँचते ही मेरी खाट लग जाएगी।
बिजली का कुछ पता नहीं है,
मेरी इसमें खता नहीं है।
रो-रो कर जब नम्बर आया,
वो बोला अब बस करो भाया।
जाकर घर पर खाना खाया,
रात भर फिर सो नहीं पाया।

– यूसुफ आबिदीन, नवीं, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

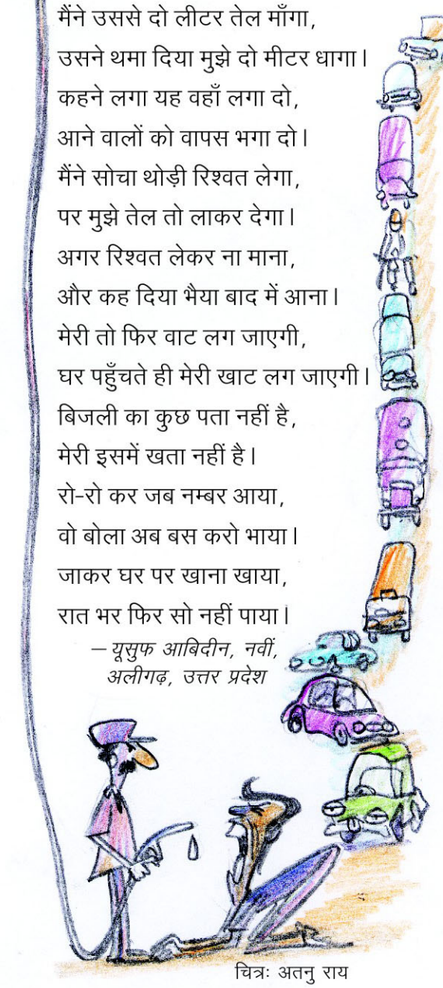

चित्रः अतनु राय